

S.H. RAZA

101, RUE DE CHARONNE

2, CITÉ DU COUVENT

75011 PARIS

TÉL. 370-97-64

गोराक्या - १४ सितम्बर - १९८१

प्रिय गुरुसा,

आपका पत्र । सबसे पहले हमारी हार्दिक शुभ कामनाएं (बीका करें -
आपके विवाह के लिये । मुझे किसी इन्हें इस समाचार के फाँदे और यह जानकारी भी
की गान्गुनी जी आपके कामकाज में पूरी सहायता और सहयोग दे रहे हैं ।

समकालीन भारतीय कला के विस्तार में P. H. D. करने का इरादा बहुत
अच्छा है । इस सालसिल में आपको बहुत कुछ पढ़ना, सोचना और लिखना
पड़ेगा और मुझे विश्वास है कि यह लाभदायक होगा ।

आपको मेरी सहायता नहीं, पूरा सहयोग मिलेगा । हालांकि "एकग्रह" के
विशेष अंक में मेरे कार्य पर सब कुछ छपा जा चुका है, फिर भी जिस
साधना को आपका गौरव होगा, मैं भोगूंगा ।

इस पत्र में मेरे ई. और भाई को, गन्दी में ले जाकर लाई है । बड़ी
व्यस्तता है । १० नवम्बर (November) दिल्ली की सबसे सुन्दर गौरी में
प्रदर्शनी है । नानिन भी साथ हैं । हम दो आकृष्टवाक्य यहां हैं । इसके बाद
पौंस । दिल्ली और आपल का निमंत्रण है । त्रिगुणल और भात तक ।
आने की बड़ी इच्छा है, मगर फिलहाल मुश्किल ही लगता है । अगले साल
दे-ती प्रदर्शनी तय हो गई है - फ्रांस में और वास तोर से Berne, Switzerland
अक्टूबर १९८२ में । मेरी कमनोरियों के कारण और यहां की परिस्थितियों के
के कारण ही काफी समय, उजा व्यर्थ हो गयी है, और कभी कभी,
अकि बोध के शब्द सामने आते हैं :

"काश मैं निज से बड़ा और सत्य हो पाता"

फिर भी उद्देश्य यही है : कला और गुरुयता दोनों को
निगना है । एक पूरे पुण्य धार्मिक विश्वास से । किन्तु भी मुश्किल
है, होना चाहिये, कि एक अच्छा निज का एक अच्छा और पवित्र इ-सा
रह सके ।

जिसे आपने जो मैं अपने कर के जो मैं, प्रदर्शितियों के जो मैं
आपके आपके पति को हम दोनों का निवेदन

३ अक्टूबर तक : RAZA, 101 rue de Charonne
GDR Bio. 06500 MENTON - France -